International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 20-23

समकालीन हिन्दी कविता और आदिवासी समाज

डॉ. कंचन गोयल

हिन्दी विभागाध्यक्षा एस. डी. कॉलेज फॉर वूमैन मोगा पंजाब

प्रस्तावना

समकालीन हिन्दी कवियों ने आधुनिकता के दौर से प्रभावित समाज एवं संस्कृति की ज्वलन्त समस्याओं को चित्रित किया है। वर्तमान समय में कवियों ने बहुचर्चित विषय–स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श, आदिवासी विमर्श पर गहन चिन्तन एवं प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

आदिवासी से तात्पर्य एक विशिष्ट भू–प्रदेश में रहने वाला, समान बोली बोलने वाला, अक्षरों की पहचान न जानने वाला, समूह गुट 'आदिवासी' कहलाता है। डॉ. विवेकी राय ने पिछड़े अंचलों पहाड़ों वनों के निवासियों को आदिम संस्कृति माना है।

प्रकाश चन्द मेहता– ''आदिवासी समाज से अभिप्रायः देश के प्राचीनतम निवासियों से है जो कि उन्नति के पथ की ओर अग्रसर नहीं हो पाए और देश की मुख्य धारा से कट गए। इन्हें अलग–अलग देशों में अलग–अलग नामों पुकारा जाता है। पाश्चात्य देशों में इन्हें 'जिप्सी' कहा जाता है वहीं विकासशील देशों मे इन्हें जनजाति, आदिवासी या अन्य समकक्ष नामों से पुकारा जाता है। (आदिवासी विकास एवं प्रथाएं–प्रकाश चन्द मेहता, पृ. 1, डिस्कवरी पब्लिकेशन, दिल्ली)

भारत का 21 प्रतिशत भू–भाग वनों, पहाड़ों का है। महाराष्ट्र, आन्ध्र–प्रदेश, केरल, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, बिहार, नागालैंड, असम, राजस्थान, मणिपुर, त्रिपुरा, पश्चिमी बंगाल आदि राज्यों में बस्तर, अल्मोड़ा, कुल्लू, कुमाऊ, हिमाचल, विन्ध्याचल आदि अनेक क्षेत्रों में नट, करनट, गोंड, मील, ऊराव कातकारी, कोल, वारटी, संथाल, बैंगो, चेंचु बंजारा, मिझो, नागा, गुर्जर, खांसी कोली, धोबी, जुआंगआदि अनेक आदिवासी जनजातियाँ निवास कर रही है।

आदिवासी संस्कृति एक अद्भूत संस्कृति है। आदिवासी समाज अधिक सद्भावनापूर्ण और मानवतावादी है। इनमें असमानताएँ कम है। इनके समाज में बोध और जीवन का आनन्द उठाने की स्वतः प्रकृति है। विकास और परिवर्तन की दृष्टि से आदिवासी क्षेत्रों में बहुत विविधता है। आदिवासी समाज जब अपना आदिवासी स्वरुप छोड़ देता है और आधुनिक बनने की आपाधापी में अपने आदिवासी व्यक्तित्व के सदगुणों को भुलाकर सम्य कहलाने वाले समाज के दुर्गणों को तेजी से अपनाने से आधारहीन हो जाता है। दूरदराज के खानों में काम करने वाला आदिवासी अपने समुदाय से बाहर निकलकर स्कूल, कॉलेजों में पढ़ने वाला युवक सरकारी, गैरसरकारी प्रतिष्ठानों में लगे युवक प्रतिष्ठा के स्थानों में लगे है एवं आनन्दमय है, लेकिन माता–पिता, सम्बन्धियों को पिछड़ा एवं हमें समझने की प्रकृति पैदाकर परम्पराओं से मुक्त मानने लगे हैं, एवं आनन्दमय है, जबकि बहुत बड़ी संख्या में विपन्न जीवन व्यतीत करते हैं। गरीबी में पैदा होते है और गरीब ही मर जाते है। आदिवासी समाज में मानवीय रिश्तों का आधार सहकार है। सहकार के विभिन्न स्वरुपों को व्यवहार स्वरुप देखा जा सकता है। वह आस्तिक है। आदिवासी समाज अनेक सदभावना पूर्ण और मानवतावादी है। इनमें असमानताए कम हैं। इनमें सौन्दर्य बोध और जीवन का आनन्द उठाने की स्वतः प्रकृति हैं।

आदिवासी समाज अर्थाभाव, अज्ञान अन्धश्रद्धा शोषण के कारण चिरकाल से पीड़ित है। आधुनिक विज्ञान तंत्र का अभाव धर्म प्रभाव के कारण आदिवासी समाज में बदलते समय एवं परिस्थिति के अनुसार नवीन प्रगतिशील विचारधारा का अभाव है। आदिम संस्कृति एवं परम्परा को सांस्कृतिक धरोहर मानते हुए सुरक्षा के लिए सरकार अनेक विकास योजनाएं आरम्भ करके आदिवासी समाज के विकास के लिए कार्यरत है। वनवासी, विकास मण्डल, गिरिजन सेवा संघ, भारत सेवक संघ, वनांचल विकास परिषद आदि अनेक संगठन विकास हेतु प्रयासरत् है। लेकिन स्थिति में विशेष सुधार का अभाव है।

समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासियों के जीवन की पीड़ा, त्रासदी, जीवन शैली को विभिन्न हिन्दी कवियों ने चित्रित किया है। यह चित्रण अत्यंत मार्मिक है। यह चित्रण मानवता एवं मानवीय हृदय को कम्पित कर देने वाला है। इस धारा के प्रमुख कवियों में महादेव टोम्पो, हरिराम मीणा, रामदयाल मुन्डा, ग्रेस कपूर, निर्मला पुर्तुल, रणेन्द्र, अनुज लुगुन, रमणिका गुप्ता, कुमारेन्द्र, पारसनाथ सिंह एकान्त श्री वास्तव, विनोद कुमार शुक्ल, ज्ञानेन्द्र पति, चन्द्रकान्त देवताले, विनोद दास, ऋतुराज, सुदीप बनर्जी भगवान गव्हाडे आदि प्रमुख है।

समकालीन संदर्भ और आदिवासी समाज

भूमण्डलीकरण नव–उपनिवेशवाद, आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता के दौर में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रभाव मानवीय मूल्यों तथा जीवन को प्रभावित कर रही है। इस विषय में डॉ. विनोद कुमार शुक्ल ने समय की भयावयता को पहचान कर लिखा है।

जो प्रकृति के सबसे निकट है/जंगल उनका है/आदिवासी जंगल में सबसे निकट हैं। इसीलिए जंगल उन्हीं का है/अब उनके बेदखल होने का समय है/यह वही समय है। जब आकाश से पहले/एक तारा बेदखल होगा। एक पेड़ से/पक्षी बेदखल होगा/ आकाश से चाँदनी, बेदखल होगी/ जंग से आदिवासी, बेदखल होगें/जब कविता से एक–एक शब्द, बेदखल होंगे।

आदिवासी जो परम्परागत जीवन व्यतीत कर रहा है उन्हें जंगल से बेदखल करने का समय दर्दनाक है। ग्लोबाइजेशन के दौर में बाजारवाद तथा पश्चिमी संस्कृति पूर्णतः फलीभूत हो चूकी है। खाओ–पीओ मौज उड़ाओ। स्वयं से लगाव अन्य से अपरिचित का भाव मानव संस्कृति के लिए घातक है। सुदेश तनवर ने इस विषय की गम्भीरता को ध्यान मे रखकर लिखा है।

निजीकरण/उदारीकरण/भूमण्डलीकरण की आड़ में/तुमने छिछोरेपन की सारी हदे तोड़ दी हैं/मैं तुम्हारे पुरखों के दिए गए जातीय अपमान की आग में झुलस रहा हूं/भूख से बिलबिला रहा हूं। तुम मिनरल वाटर/स्कॉच नरम–नरम गुदाज की मस्ती में झुम रहे हो/पर आज मेरा दर्द कल तुम्हारा ही होगा/क्या करोगे। मेरे अपमान भूख–पीड़ा के इतिहास सत्यों को दरकिनार कर/सबकी आँखों में धूल झोंक देश के गुलाम होने का

ढिढोरा–पीटोगे/दलाली करते हुए खुद भी कुद पड़ोगे/स्वतंत्रता के कदम आन्दोलन में बन बैठोगे/एक बार फिर महान देश भक्त राष्ट्र के शुभ चिंतक।

आज आदिवासियों के विस्थापन की समस्या बहुत गम्भीर है। आदिवासी जो परम्परागत जीवन शैली में जीवन व्यतीत कर रहे थे। अस्तित्व के साथ ही उनके परम्परागत ज्ञान एवं भाषायी अस्मिता के लिए भी प्रतिकुल समय है। हरिराम मीणा नव मध्य वर्ग तथा नव धनाढ्य वर्ग दोनों की ओर ध्यान आकर्षित कर उन्हें सजग करने का प्रयास करते हैं।

एकान्त को बनाना चाहिए कोई विकल्प/विराट ऊर्जा का श्रोत/वे ऐश्वर्य ओढ़कर सोते हैं निश्चित हम संघर्ष की सूली पर चढ़कर भविष्य के आकाश में तलाशते हैं/स्वयं का परिचय और स्थान तनिक सोचो/ इस निर्जन एकाकी काश में भी/मैं कहाँ हुआ निरूत्साहित।

कवि हरिराम मीणा की दुरदृष्टिता खतरे को पूर्व ही अनुभव कर लेती है। अमेरिका में हुए रेड इण्डियन्स (Red Indians) के सफाए को आधुनिक कुबेर पति नया जाता पहनाते है। आदिवासी को दैनिक भौतिक आवश्यक वस्तुओं से वंचित किया जा रहा है।

वह कुबेर चर रहा था पहाड़ो को/जंगलों को/ वनस्पतियों को/जीवों को/पी रहा था नदियों को/झरनों को/सरोवरों को/झीलों को/समुद्रो को।

आदिवासी कविताओं में अहम् सवाल जो उभरकर आया है वह है–अलगाव। आज आदिवासी अपने ही घर में परदेशी बन गए हैं। इस का कारण औपनिवेशिक युग में आदिवासियों की जमीन छिन्न जाना था। जमीन उनकी आजीविका का आधार है। यह एक भयावह स्थिति है।

आदिवासी समाज में विरसा आदर्श का प्रतीक है। भूमण्डलीकरण ने उनके जेहन से यह निकालने का प्रयास किया कि जमीन उनका आधार है। समस्याएं बढ़ने के कारण आदिवासियों का उग्र रूप भी सामने आता है।

अनुज लुगुन युवा कवि है उन्होंने इस विषय से सम्बन्धित मर्मस्पर्शी एवं मस्तिष्क को उद्धेलित करने वाले प्रगतिवादी विचार प्रस्तुत किए हैं।

लड़ रहे हैं आदिवासी/अघोषित उलगुलान में/कट रहे हैं वृक्ष/माफियाओं की कुल्हाड़ी से ओर/बढ़ रहे हैं/कंक्रीटो के जंगल/ जाए तो कहां जाए/कटते जंगल में बढ़ते जंगल में।

निर्मला पुर्तल आदिवासी जीवनपर केन्द्रित साहित्य लिखती है। उन्होने आदिवासियों के समय में लिखा है।

धरती के इस छोर से उस छोर तक/मुट्ठी भर सवाल लिए मैं/दौड़ती–हाँफती–भागती/ तलाश रही हूँ सदियों से/निरन्तर/ अपनी जमीन, अपना घर/अपने होने का अर्थ।

इसी क्रम में विस्थापन की त्रासदी झेल रहे आदिवासियों के जीवन पर आधारित कुमारेन्द्र पारस नाथ सिंह की बन्धुधारा कविता में वर्तमान स्थिति का चित्रण है। बन्धुदास तो तुम जानते हो मोहन गांजू/तुम्हारे अपने जंगल से बेदखल किए जाने का बहुत गहरा रिश्ता है/उसके उन छेदों का। दतुवन बेलना छोड़कर तुम भी/फावड़ा और बेलचा क्यों नहीं उठा लेते।

''बोलो मोहन गांजू'' कविता संग्रह में विरसा के उतराधिकारियों की दयनीय स्थिति का चित्रण है। यह तीसरी पुस्त है खदान की जिससे भारत ने/जंगल के सब सपने छीन लिए है, और संखुआ/या साल की गन्ध कैसी होती है, उसे नहीं मालुम/मालुम यह भी नहीं कि जिस नदी के जल में स्नान/करता है उसका क्या नाम है और वह पहाड़ से कैसे निकलती है। बानी ने उसे साहब या मुन्शी की बात पर सिर झुकाकर/चलना सिखाया है सीसो की तरह तनकर खड़ा होना नहीं।

समकालीन कवि सरकार द्वारा आदिवासी विकास कार्यों को विकास न मानकर एक भ्रान्ति मानता है। सरकार के प्रति उनका प्रतिरोध प्रकट होता हैं। वे उन्हें उनकी निजी स्वतंत्रता में बाधक कहते हैं। ज्ञानेन्द्र पति नवनिर्मित सड़क के विषय पर व्यंग्यात्मक रूप से लिखते हैंः– विकास के लिए सरकार योजनाएं लागू करती है लेकिन उनका लाभ उन्हें नहीं मिल पाता है।

इस आदिवासी गाँव के आँगन से गुजरती हुई सड़क/अत्याचारियों के गुजरने का रास्ता है/ यह इनके पैरों से नहीं/यह इनके पैसे के लिए नहीं बना/बड़े–बड़े रोड रोलर आए ये लुटेरे वाहनों के आने से पहले/धरती काँपती धीरे–धीरे चलते हुए विशाल काय रोड़–रोलर।

सरकार आदिवासी उत्थान के लिए आरक्षण दे रही है लेकिन आरक्षण का लाभ पाने वाले एवं उसके हकदार आदिवासियों की जीवन स्थिति को चिंताजनक माना है।

वे जो सुविधा भोगी है/या अवसरवादी है/ या जिन्हें आरक्षण चाहिए/कहते हैं हम आदिवासी हैं वे जो वोट चाहते हैं/ कहते हैं तुम आदिवासी हो, वे जो धर्म प्रचारक हैं/कहते हैं तुम आदिवासी जंगली हो/वे जिनकी मानसिकता यह है/कि हम ही आदि निवासी हैं/कहते हैं तुम वनवासी हो, और वे जो नंगे पैर/चुपचाप चले जाते हैं जंगली पहाड़ियों में/कभी नहीं कहते कि हम आदिवासी हैं/वे जानते हैं जंगली जड़ी–बूटियों से/ अपना इलाज करना। वे जानते है जन्तुओं की हरकतों से/मौसम का मिजाज समझाना/सारे पेड़ पहाड़ नदी झरने जानते हैं कि वे कौन हैं।

समकालीन कवियों ने सरकारी अधिकारियों के क्रियाकलापों का चित्रण किया है ये जन सहायक न होकर जन–विरोधी साहब हैं ये जन लुटेरे हैं। सरकारी कर्मचारी अपने पदों का अवैध लाभ उठाते हैं विनोद दास ने लिखा है।

यही वह वक्त होता है/आता है शहर से एक जीप/उड़ाती हुई धूल हमारी इच्छाओं पर/उतरते हैं टाई पहने साहब हुक्त देते है/हम पहनेंगे नाच हम नाचते हैं/कसते हैं वे फब्तियाँ भूली यातनाएं प्रकोप और जंगल/याद आने लगते हैं हमें फिर/सुबह होती है पड़ी मिलती है बंगले में/हमारे कुनवे की बेसुध लड़कियाँ/उनके देह पर चमकते हैं/दाँत और नाखून के उभरे निशा दिन के उजाले में।

युवा कवि भगवान गव्हाडे आदिवासी समाज में जब जागरण की चेतना भरने का प्रयास करते हैं उन्हें अपने स्वाभिमान अधिकारों एवं विभिन्न प्रकार से किए गए शोषण के प्रति जागरूक होकर एक जुट होने की प्रेरणा देते हैं।

हजारों सालों की उपेक्षा–गुलामी/तहस नहस कर देना है/ समय आ गया संकल्प शपथ का/अब नहीं पीछे रहना है/ मर–मर कर जीने से बेहतर/मार–मार कर जिन्दा रहना है/झूठे वादे इरादों के भ्रम जाल को भली–भांति समझना है/दलित आदिवासी बहुजन समाज को/एक जुट होकर अपना हिस्सा लेना हैं। आज का आदिवासी अपनी अस्मिता के लिए लड़ रहा है।

आदिवासी समाज में शिक्षा की चिंगारी फूंक कर उन्हें समाज की मुख्य धारा में स्थान बनानू को कवि का मन्तव्य है। शिक्षा को ये महत्व दे रहे हैं। आज अनेक आदिवासी शिक्षा ग्रहण कर अनेक पदों पर कार्यरत है।

चक्रव्यूह है चहू और साथियों/सम्भल–सम्भल कर चलना है/ भेदना है तीर कमान व तलवार लेकर/ पढ़ लिख कर अब बोलना है। कायदे कानून राजनीति समझकर/मुख्य धारा में आना हैं।/ हजारों सालों की गुलामी उपेक्षा/ तहस नहस कर देना है।

भगवान गव्हाडे ने अपनी कविताओं में विविध समस्याओं को व्यंग्यात्मक रुप से चित्रित किया है। भाषा, सहित्य, संस्कृति सभ्यता किसी भी पक्ष का वर्णन हो, व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया हैं। भाषा को आज स्टेटस सम्वल माना जाता है। इस पर संक्षेप में अंतरंग–बहिरंग कविता में लिखा है–

सुना है कि अंग्रेजी में बोलने से/आदमी में आ जाती है सभ्यता/
और हिंग्लिस के व्यवहार से/बनता है खड़ा आलोचक विद्वान।

अन्तरंग बहिरंग कविता में मूल्यों में परिवर्तन एवं दिखावे की प्रवृति यह करारा व्यंग्य है–

दिखाई दे सुसंस्कृत घराने के लक्षण इसलिए/गाड़ दिया है गमले में गैलरी में तुलसी का एक अदद पौधा/स्वदेशी, शालीनता और सभ्यता को बनाए रखने के लिए/खरीद लिए है दो चार खद्दर के कुर्ते पाजामे।

समाज में यौन शोषण और बलात्कार की घटनाएं निरन्तर बढ़ती जा रही है इनका शिकार दलित एवं गरीब वर्ग की महिला की अधिक होती है।

इतिहास के पन्नों में/अनगिनत सिसकियाँ/खामोश चीखें/दबी कुचली/गर्दनें/दलित आदिवासी घुमन्तु जनजातियों की/आहे, बद्दुआएं पापित शापित/अपमानित प्रताड़ित करते रहे बरसों–बरस/दलित कुण्ठित सत्ता भोगियों/तुमने बेशर्मी से पाश्विक बलात्कार/नहीं देखी उम्र की सीमाएं/बालिकाओं से लेकर बुढ़ियों तक/नहीं बच सकी गरीबों की बहु–बेटियों/हवस का नंगा नाच, नाच करते रहे/युगों–युग दिन रात निरन्तर अविरत होने पर इन्द्रिय शापित, स्खलित/दर्द और पीड़ा से कराहते हुए बर्बाद हो गई कइ पीढ़ियाँ/भोगती रही, सहती रही, झेलती रही। अन्ततः यातनाओं से भरे/आदिकाल मध्यकाल रीतिकाल आधुनिककाल से उतराधुनिक काल तक।

आज मीडिया और विज्ञापन का युग है। मीडिया में विज्ञापन महत्वपूर्ण हैं। भूमण्डलीकरण तथा बाजारवाद के प्रभाव के कारण विज्ञापन जन–जीवन को प्रभावित करता है कहीं–कहीं विज्ञापन नैतिक स्तर गिरावट पैदा करते हैं।

पहले पृष्ठ पर ही छपता है/शिथिल इन्द्रिय को उद्धीप्त करने वाली/औषधियों का बड़ा सा रतिमान/स्त्री पुरूषों का विज्ञापन/बच्चे कोतुहल से पूछते है उगली निर्देश करते हुए/ ''पापा यह किस दर्द की दवा है/''कोई डाल देता है जैसे मेरे कानों में गर्म खोलता हुआ, शीशा/शील जाती है जुबान/झुक जाती है शर्म के मारे गर्दन/साँप सूँध जाती है अचानक।

भौतिकवाद की दौड़ में जहाँ सम्बन्धों में बिखराव एवं विखण्डन है उसके लिए मीडिया भी जिम्मेदार है। मीडिया (टी.वी) अनेक चैनलों पर जो फिल्में, धारावाहिक प्रस्तुत करता है उनमें अधिकांश में सम्बन्धों में विखराव, प्रेम–विच्छेद, धोखा–धड़ी लिवईन रिलेशनाशिप, सास–बहु के झगड़े स्त्री–पुरूष की क्रुरता आदि मुख्य रूप से मंचित होते हैं।

टी.वी. शुरू कर दू तो/दिखाई देते हैं हर चैनल पर/सास–बहु के विभत्स झगड़े/स्त्री–पुरूष की क्रूरता बर्बरता/शुरू होती है अवैध सम्बन्धों की श्रृंखला/प्रेम विच्छेद, धोखाधड़ी, लिव इन रिलेशनशिप/रिश्तों की उडायी जाती है धज्जियाँ विभत्स रिएल्टी शोज/फैशन शो में चिमड़े पहनकर/कट वाक करती हुई हॉट मॉडल्स/नग्न यथार्थ की संकल्पना का हो जाता है सीमोल्लंघन/
आजा नच ले, जरा नच के दिखा/टच करके दिखा के कामुक योगासन/खुली की खुली रह जाती है आँखे। छा जाता है आँखों के सामने घुप्प अन्धेरा।

गव्हाडे जी ने आदिवासी को महामानव की संज्ञा दी है उनके अनुसार आदिवासियों के बलिदान और कुर्बानी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आजादी के इतिहास में भी आदिवासियों की एक महत्वपूर्ण भुमिका रही है।

21वीं शताब्दी के झूठे बेर खाकर वनवास में राम रह सके
जीवित/वीरांगना झलकारी के प्रार्थना से हुई रानी लक्ष्मी बाई की
जीत/काली बाई सिनगीदई के राष्ट्र प्रेम से हुआ इतिहास
सुसज्जित/क्रान्ति सूर्य विरसा मुण्डा हो गये देश के लिए
शहीद/जन नायक तटंया मीन पूरी कर दी गई जनता के मन की
मुरीद/ताना भगत की सादगी से हुए गाँधी को प्रभावित/
गोविन्द गुरु के संस्कारों की धूनी जलती रहे गतिमान/संत बसा
जी और मुंगसा जी महाराज का है महाराष्ट्र में शीर्ष स्थान/पर्वत
पुरूष दशरथ मांझी है दृढ़ संकल्प के दुनिया में एकमात्र प्रमाण।

कवि ने राजनेताओं तथा साहित्यकार जो अपने कर्तव्य से विमुख हो चुके हैं। उन पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए लिखा है–

वार रे कवि कहां खो गये थे
कल्पना के अन्धे कूप में डूबकियां लगा रहे थे
या यथार्थ के आभासी अवकाश में विहार कर रहे थे
इस अलंकार, छन्द और मात्राओं की उधेड़बुन में
कब तक समय, समाज और साहित्य के साथ खिलावाड़ करते रहोगे
वाह रे इतिहास कार।

आदिवासियों की जहाँ झुग्गी झोपड़ियाँ की उनका शीश महल होती है उन्हें धराशायी कर उन्हें किस प्रकार के उनके घरों से बेघर किया जाता है।

झुग्गी झोपड़ियों का महासागर/आये दिन चलते दिखाई देते हैं। उन पर बुलडोजर/चीख–पुकार गाली–गलौज/मार–पीट, उठाना–टपकना प्राणों के सुपारियों की लेन–देन/पेटी–खोखा के व्यवहार औरतों की खरीद फरोख्त/हो गयी आम बाते धराशायी हो जाती है झोपड़ पट्टियाँ/खड़ी हो जाती है उसी जगह महाकाय आकाश चूमती विल्डरों की फसले। अफसर नेताओं के/रिश्तेदारों की होती है आदर्श और खाश बातें।[23]

आदिवासी समाज के लोगों का आजादी में भी योगदान रहा हैं। विरसा मुण्डा इनके जननायक रहे हैं जो अंग्रेजों के खिलाफ लड़े। लड़े थे कभी क्रान्ति सूर्य विरसा मुण्डा/जल जमीन और जंगल की खातिर/ थी लड़ाई अंग्रेजों के खिलाफ/ उलगुलान था उनका नारा और शंखनाद/ हिल गई थी साम्राज्य की दिवारे/ बोया था अग्नि बीज अपनी आहुति देकर। (आदिवासी मोर्चा–भगवान गव्हाडे, पृ॰ 7)

आदिवासी समाज अपने अधिकार और अस्मिता के लिए लड़ने के लिए अग्रसर है। वह प्रत्येक परिस्थिति में मुकाबला करने को तैयार हैं।

लड़ना होगा हमें भी/ दलित आदिवासी बहुजन और शोषितों की/
मुक्ति के लिए/ वैश्वीकरण के इस अग्नि गर्भ का कुचक्र भेदना
होगा हमे भी न केवल अपने मूल भूत अधिकार के लिए/ बल्कि
लड़ना होगा।(आदिवासी मोर्चा–भगवान गव्हाडे, पृ॰ 8)

डॉ. के.एस. सिंह विख्यात मानवशास्त्री ने दलित साहित्य से आदिवासी साहित्य की कुछ विभिन्नताओं की ओर संकेत करते हुए लिखा है–''दलित साहित्य का सम्बन्ध दलित चेतना से है, राजनीति से है, आन्दोलनों से है। दलित साहित्य में बहुत आक्रोश है, पूर्ण विद्रोह, अलगाव है। आदिवासी साहित्य जो आदिवासी वगैर आदिवासी द्वारा लिखा गया है। उसमें जीवन की समग्रता दिखाई पड़ती है। उसमें असीम सौन्दर्य बोध है। उसमें प्रकृति के प्रति एक सांझा लगाव है। आदिवासी साहित्य में द्वन्द्व संघर्ष शोषण एक प्रमुख धारा के रूप में उभरकर सामने आयी है। आशा है कि एक

मात्र धारा रहेगी और यह आदिवासियों की समग्र दृष्टि है जो सौन्दर्य बोध को प्रभावित नहीं करेंगे।''

समकालीन कविता में जहां युग बोध, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श है वहीं आदिवासी विमर्श भी अनुस्यूत है। समकालीन कवियों ने अपनी कविताओं में आदिवासी समाज की अनुभूत पीड़ा को कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह सामान्य से निम्नतर जीवनयापन जो आदिवासी समाज कर रहा है, किस प्रकार उनका शौषण, दमन, स्त्री यौन शौषण होता है। इन सभी विषयों को आक्रोश, विद्रोहात्मक एवं व्यंग्यात्मक ढंग से कवियों ने प्रस्तुत किया है। आदिवासी समाज का देश के प्रति योगदान तथा बलिदान का भी वर्णन कुछ कवियों ने किया है। आज का आदिवासी अपनी अस्मिता के लिए लड़ रहा है। वह अपनी अलग पहचान चाहता है। आदिवासी कविता केवल कविता नहीं है अपितु भविष्य की आहट् है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री ए.वाय. कोडेकर– भारतीय आदिवासी समाज पृ. 6, फड़के कोल्हापुर–1987।
2. आलोचना – अप्रैल– जून, 1984, पृ. 47।
3. विनोद कुमार शुक्ल – वागर्थ अंक 185, आमुख, पृ. 20, दिसम्बर 2010।
4. भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर – विमल पोरात– सुरज बडत्या पृ॰ 20, (रावत पब्लिकेशन –जयपुर, 2008)।
5. हरिराम मीणा – रोया नहीं था यक्ष – 2003 पृ. 40–41 (जगत राम एण्ड सन्स, दिल्ली)।
6. हरिराम मीणा – रोया नहीं था यक्ष – 2003 पृ. 26 (जगत राम एण्ड सन्स, दिल्ली)।
7. प्रगतिशील वसुधा –85– अप्रैल– जून, 2010, पृ. 185
8. निर्मला – पुर्तुल – अपने घर की तलाश में पृ. 03 (रमणिका फाऊण्डेशन दिल्ली – 2004)।
9. कुमारेन्द्र पारस नाथ सिंह – बोले मोहन गांजू पृ. 44 (दिल्ली लोक मित्र प्रकाशन, दिल्ली), 2008।
10. कुमारेन्द्र पारस नाथ सिंह – बोले मोहन गांजू पृ. 44–45 (दिल्ली लोक मित्र प्रकाशन), 2008।
11. ज्ञानेन्द्र पति – संशयात्मा, पृ. 20, राधाकृष्णन प्रकाशन दिल्ली, 2004।
12. प्रगतिशील वसुधा –85 अप्रैल– जून, 2010 पृ. 02।
13. विनोद दास –खिलाफ हवा से गुजरते हुए पृ. 24–25, भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली – 1986।
14. आदिवासी विकास एवं प्रथाएँ प्रकाश चन्द्र मेहता–पृ॰01 डिस्कवरी पब्लिकेशन दरियागंज दिल्ली–2009।
15. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 27 वाणी प्रकाशन दिल्ली 2014।
16. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 27।
17. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 31।
18. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 32।
19. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 41।
20. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 44।
21. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 49–50।
22. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 57।
23. भगवान गव्हाडे – आदिवासी मोर्चा (चक्रव्यूह) पृ. 61।
24. रमणिका गुप्ता – निज घर परदेशी, पृ. 08, वाणी प्रकाशन – 2008।